संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : १८ ● ३० मई २०१७ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पंचमी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

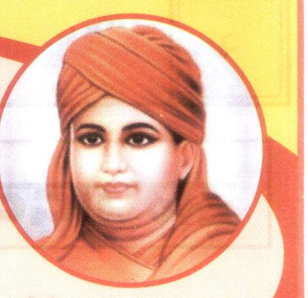

आर्य समाज ही वर्तमान समस्याओं का समाधान

डा० धीरज सिंह आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के कर्त्तव्यनिष्ठ एवं यशस्वी प्रधान डा० धीरज सिंह आर्य ने आर्य समाज याशीनपुर, हरदोई के वार्षिकोत्सव को संबोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज ही वर्तमान समस्याओं का समाधान है। महर्षि दयानन्द के बताये गए नियमों एवं आर्य समाज की नीति के द्वारा ही समस्याओं को दूर किया जा सकता हैं आज समाज के परिवार में अलगाव की भावना पैदा हो रही है। समाज का आपसी भाईचारा प्रेम समाप्त हो रहा है। हम आज का भौतिकवादी जीवन में सामाजिक मूल्यों को भूल–चुके है। जिससे समाज की एकता का पाठ पढ़ाया जाता था। इसका मूल कारण है हम वैदिक संस्कृति और आर्य समाज की विचार धारा से दूर जा रहें हैं। यदि हमें इसे समाप्त करना है तो हमें आर्य समाज की शरण में जाना होगा। उसके बताये गये नियमों के अनुसार सब–मिलकर रहें। डा० धीरज सिंह आर्य ने आम जनता को संबोधित करते हुए कहा कि आज हमारे समाने बड़ी समस्या परिवार विघटन की है। परिवार का प्रेम– बन्धुत्व समाप्त हो गया है। पहले परिवार में आपस में प्रेम, त्याग की भावना रहती थी, सभी आपस में मिल जुल कर साथ–साथ रहते थे जिससे परिवार में सुख–शान्ति रहती थी किन्तु जो परिवार टूटने के कगार पर हैं जो परिवार आर्य समाज की विचार धारा और वैदिक संस्कृति को अपनाते हैं वही आज सुखी एवं स्वस्थ्य है अन्यथा सब–परिवार दुःख की सागर में गोता लगा रहे है जिससे उनका स्वर्ग जैसा जीवन नरक समान हो गया है। उन्होंने

कहा कि आज हमें अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने की आवश्यकता है। अच्छे संस्कार ही बालक को सुयोग्य सन्तान बनाते हैं। यदि हम प्रारम्भ से ही बच्चों को आर्य समाज में लायेगें तो आगे चलकर आर्य समाज एवं परिवार का भविष्य उज्जवल करेगें आज नारी जाति का अपमान किया जा रहा है। हमारे यहाँ नारी को शक्ति का रूप माना गया है माता निर्माण करने वाली है लेकिन वर्तमान में उसे भोग्य की वस्तु मानकर उसका अपमान किया जा रहा है। पाश्चात्य की आँधी ने नारी सम्मान को सबसे ज्यादा हानि पहुँचाई है। उसकी अस्मिता, गरिमा को बनाये रखने के लिए हमें आर्य समाज को अपनाना होगा। आर्य समाज ही नारी को देवता के समान समझता है हमारे यहाँ कहा गया है **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'** जहाँ नारी की पूजा, होती है वहाँ देवता निवास करते। सभा प्रधान जी ने वर्तमान की समस्या बेरोजगारी, शराब, सामाजिक समरसता भेद–भाव पर भी प्रकाश डाला उन्होंने कहा कि आज विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान केवल आर्य समाज हैं वही देश, समाज, समरसता, सौहार्द की बात करता है। अन्य लोग अपने स्वार्थों को प्राथमिकता देकर बात करते हैं। आर्य समाज ही समस्याओं का मूल समाधान है। इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, विमल कुमार आर्य– भजनोपदेशक, हरदोई, आचार्य सत्यवीर प्रकाश आर्य– हरदोई, वंशीधर शुक्ल, बालकृष्ण गुप्त, राकेश सिंह भदौरिया, विनोद वर्मा , उमेश कुमार वर्मा, युगुल किशोर आर्य–भजनोपदेशक, सुरेश चन्द्र आर्य आदि ने भी अपने–अपने ओजस्वी विचार व्यक्त किए।

वेदामृतम्

महाँ असि महिष वृष्ण्येभिर्[१०], धनस्पृदुग्र सहमानो अन्यान्[११]।
एको विश्वस्य भुवनस्य राजा[११], स योधया च क्षयया च जनान्[१०]।।

ऋग् ३.४६.२

हे हृदयाधिराज परमात्मन्! तुम 'महिष हो, महान् हो, परम महनीय हो। तुममें महत्ता की पराकाष्ठा है। हम अमहान् क्षुद्रजन तो तुम्हारी गगनचुम्बिनी, सर्वव्यापिनी महत्ता को देखकर विस्मय से सितमित हो जाते हैं। तुम 'धनस्पृत' हो, सर्वविध ऐश्वर्यों के प्रदाता हो। इस जगतीतल में जो भी विविधि ऐश्वर्य भरे पड़े हैं, उन्हें उत्पन्न करने वाले हम मानव नहीं हैं, प्रत्युत तुम ही उनके जन्मदाता और प्रदाता हो। हम अल्पशक्ति जन तो बिना तुम्हारी दी हुई उपदान-सामग्री के छोटी-से-छोटी वस्तु को भी रचने में असमर्थ हैं। तुम नास्तिक जनों को परास्त करने वाले हो। उन्हें परास्त करने के तुम्हारे पास दो उपाय हैं। या तो उन्हें तुम अपनी किसी चामत्कारिक घटना से प्रभावित कर आस्तिक बना देते हो या वे तुम्हारे विरोध में भाषण करते ही हर जाते हैं और तुम उन्हें अपने भयंकर चक्रवात से कहीं का कहीं उड़ा ले जाकर पटक देते हो। तुम अपने वर्षक गुणों और बलों से परम महिमान्वित हो। तुम निर्गुण के गुण हो, निर्बलों के बल हो। जो भी सत्य, न्याय दया आदि गुणगण तथा आत्मिक और शारीरिक बल संसार में दृष्टि गोचर होते हैं, उन सबकी उद्गमभूमि तुम्हीं हो।

तुम ही सकल भुवन के, समस्त ब्रह्माण्ड के, एकमात्र राजा हो, सम्राज हो। राजा होने के दम भरने वाले महान् से महान् व्यक्ति तुम्हारे सम्मुख सेवक-तुल्य हैं। तुम्हारे समकक्ष अन्य कोई विश्व का सम्राट नहीं है। जो अग्नि, वायु, सूर्य, यम, मातरिश्वा, ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, वरुण आदि देवों की स्तुति वेदों में की गई है, वे तुम्हारे ही विभिन्न नाम हैं। वे तुमसे पृथक सत्ता नहीं रखते।

हे राजाधिराज इन्द्र परमात्मन! तुम अपनी प्रजाओं को कायर न बनाकर उनसे युद्ध करवाओ, संघर्षों में जूझने का साहस उनके अन्दर उत्पन्न करो, उनसे संग्राम करवाओं, और उन्हें विजय दिलाओ। अकर्मण्य रहकर, संघर्षों में विजय ही निवास की कुंजी है। हे देव! हमारी इस प्रार्थना को पूर्ण करो, जिससे तुम राजराजेश्वर की छत्र- छाया में रहते हुए हम चरम उत्कर्ष को प्राप्त करने में समर्थ हो सकें।

आचार्य कुलदीप शास्त्री

डॉ. धीरज सिंह
कार्यवाहक प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

महापुरुषों के नाम पर बटता समाज

महापुरूषों के नाम पर होने वाली शोभायात्रा समाज को सार्थक संदेश देने के स्थान पर समाज में आपसी वैमनस्यता पैदा कर रही है। विभिन्न जयन्तियों में सम्मिलित भीड़ के नाम उन्मादी युवा ध्वनि प्रदूषण करने वाले ध्वनि विस्तारक बड़े–बाजे आदि सामान जन सामान्य के लिए पेरशानी पैदा करते हैं। क्योंकि शोभा यात्रा में सम्मलित भीड़ पर किसी का प्रतिबन्ध नहीं रहता और भीड़ उन्मादी की तरह कार्य करने लगती है जिससे अशांति फैलती है और इससे हिंसक घटनाओं को बल मिलता है। किसी महापुरूष के नाम पर होने वाली शोभा यात्रा या विभिन्न संगठनों द्वारा होने वाले कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य लोगों को एकत्रित कर जन जागृति फैलाना था।

शोभा यात्रा से समाज में एक नई चेतना एवं उत्साह का वातावरण पैदा होता है। शोभा यात्रा से कोई भी संगठन अपने विचरों का प्रचार–प्रसार करता है। जयन्तियों की शोभा यात्रा का उद्देश्य उस महापुरूष के बारे में लोगों को बताना होता है। उनके द्वारा किये गये सामाजिक कार्यों की प्रस्तुति करना एवं उनसे प्रेरणा लेना ही शोभा यात्रा का कार्य है। लेकिन पिछले कुछदिनों से शोभायात्रा के नाम पर शक्ति प्रदर्शन का कार्य किया जा रहा है। विभिन्न संगठन, जाति, समुदाय के लोग अपने महापुरूषों के नाम पर होने वाली शोभा यात्रा को अपने वर्चस्व का हथियार बना लिया है जिसमें येन–केन प्रकारेण भीड़ को इकट्ठा करके समाज में अपनी पकड़ को प्रदर्शित अपना प्रभाव जमाना चाहते हैं। इससे वह समाज में अपनी प्रतिष्ठा एवं राजनीति में अपनी स्थिति पैठ मजबूत करना चाहते है। इसी भावना ने शोभा यात्रा को हिंसक यात्रा में बदल दिया है। जिसको हानि समाज की वैमनस्यता के रूप में सामने आ रहा है।

इस प्रकार की घटना समाज में आपसी सौहार्द, प्रेम एवं भाईचारे को हानि पहुँचा कर आपसी एकता को खण्डित करती है। हाल की हिंसक घटनाओं ने शोभायात्रा एवं धार्मिक आयोजनों पर एक प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। देश के विभिन्न छात्रों में घटित घटनाऐं आपसी संवाद को कमजोर कर रही है। मेरठ एवं सहारनपुर की घटना ने समाज को हिला कर रख दिया है कभी दलितों पर मुस्लिमों का हमला तो हिन्दु जातियों का आपसी विवाद किसी से छिपा नही है। सहारनपुर में दलित ठाकुरों की हिंसक घटनाओं ने अब तक कई निर्दोष लोगों की जान ले ली है। कल तक जो आपस में मिलकर कार्य करते थे वे आज एक दूसरे की खून के प्यासे बन बैठे है। जाति वर्गों में नेताओं के आपसी राजनीतिक पार्टियाँ वोट बैंक के कारण किसी वर्ग विशेष की सहायता कर दूसरे वर्ग को भड़काने का प्रयास करती है। जो भयावह जातीय संघर्ष का रूप ले लेता है। इस संकट की घड़ी में सभी को समाज की एकता, अखण्डता, प्रेम सौहार्द को बनाये रखने का प्रयास करना चाहिए। शोभा यात्रा, धार्मिक आयोजनों का कार्य अपसी प्रेम को बढ़ाना है। ना कि आपस में भेद–भाव पैदा करना। अतः हमारा प्रयास सार्थक होकर समाज के संगठन को सुदृढ़ता प्रदान कर सके तो सौभाग्य होगा।

— सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ तृतीय समुल्लासारम्भः

अथाऽध्ययनाऽध्यापनविधिं व्याख्यास्यामः

देखो! आर्य्यावर्त्त के राजपुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद अर्थात् युद्धविद्या भी अच्छी प्रकार जानती थीं क्योंकि जो न जानती होतीं तो कैकेयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्योंकर जा सकती? और युद्ध तथा राजविद्याविशेष, वैश्या को व्यवहारविद्या और शूद्रा को पाकादि सेवा की विद्या अवश्य पढ़नी चाहिए।

जैसे पुरुषों को व्याकरण, धर्म और अपने व्यवहार की विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढ़नी चाहिए से अनुकूल वर्तमान, यथायोग्य सन्तानोत्पत्ति, उनका पालन, वर्द्धन और सुशिक्षा करना, घर के सब कार्यों को जैसा चाहिए वैसा करना कराना वैद्यकविद्या से औषधि अन्न पान बना और बनवाना नहीं कर सकती।

जिससे घर में रोग कभी न आवे और सब लोग सदा आनन्दित रहें। शिल्पविद्या के जाने बिना घर का बनवाना, वस्त्र आभूषण आदि का बनाना बनवाना, गणित विद्या के बिना का हिसाब समझना समझाना, वेदादि शास्त्रविद्या के बिना ईश्वर और धर्म को न जान के अधर्म से कभी नहीं बच सकें।

इसलिए वे ही धन्यवादाई और कृतकृत्य हैं कि जो अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा के पूर्ण बल को बढ़ावे। जिस से वे सन्तान मातृ, पितृ, पति, सासु, श्वसुर, राजा, प्रजा, पड़ोसी, इष्टमित्र और सन्तानादि से यथायोग्य धर्म से बर्तें। यही कोश अक्षय है। इस को जितना व्यय करे उतना ही बढ़ता जाय। अन्य सब कोश व्यय करने से घट जाते हैं और दायभागी भी निज भाग लेते हैं। और विद्याकोश का चोर वा दायभागी कोई भी नहीं हो सकता। इस कोश की रक्षा और वृद्धि करने वाला विशेष राजा और प्रजा भी हैं।

कन्यानां सम्प्रदानं च कुमाराणां च रक्षणम्।। मनु०।।

राजा को योग्य है कि सब कन्या और लड़कों को उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रखके विद्वान कराना। जो कोई इस आज्ञा को न माने तो उस के माता पिता को दण्ड देना अर्थात् राजा की आज्ञा से आठ वर्ष के पश्चात् लड़का वा लड़की किसी के घर में न रहने पावें किन्तु आचार्यकुल में रहैं। जब तक समावर्त्तन का समय न आवे तब तक विवाह न होने पावे।

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते।
वार्यन्नगोमहीवासस्तिलकाञ्चनसर्पिषाम्।। मनु०।।

संसार में जितने दान हैं अर्थात् जल, अन्न, गौ, पृथिवी, वस्त्र, तिल, सुवर्ण और घृतादि इन सब दानों से वेदविद्या का दान अतिश्रेष्ठ है।

इसलिये जितना बन सके उतना प्रयत्न तन, मन, धन से विद्या की वृद्धि में किया करें। जिस देश में यथायोग्य ब्रह्मचर्य विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है वही देश सौभाग्यवान् होता है।

यह ब्रह्मचर्याश्रम की शिक्षासंक्षेप से लिखी गई। इसके आगे चौथे समुल्लास में समावर्त्तन विवाह और गृहाश्रम की शिक्षा लिखी जायेगी।

इति श्रीमदयानन्दसरस्वतीस्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे
सुभाषाविभूषिते शिक्षाविषये
तृतीयः समुल्लासः सम्पूर्णः।।३।।

क्रमशः अगले अंक में .....

माननीय उच्च न्यायालय द्वारा श्री देवन्द्र पाल वर्मा की विशेष अपील खारिज नही माना सदस्य और न ही प्रधान

Court No. 3

Case : SPECIAL APPEAL No. 228 of 2017.

Appellant : Arya Pratinidhi Sabha, U.P. Through Its President & Anr.
Respondent : State Of U.P.Through Secretary Registration & 4 Others

Counsel for Appellant : Sandeep Sharma

Counsel for Respondent : C.S.C., Anurag Srivastava,Gaurav Mehrotra
Hon'ble Sudhir Agarwal, J.

Hon'ble Virendra Kumarll, J.

1. Sri Prashant Chandra, learned Senior Advocate assisted by Ms. Stuti Mittal, learned counsel for appellants, learned Standing Counsel for respondents no. 1 to 3, Sri Anurag Srivastava, Advocate for respondent no. 4 and Sri Gaurav Mehrotra, Advocate for respondent no. 5 .

2. This is an intra-Court appeal filed under Chapter VIII Rule 5 of Allahabad High Court Rules, 1952 (hereinafter referred to as the "Rules, 1952") against order dated 15.05.2017 passed in Writ Petition No. 10563 (M/S) of 2007, rejecting appellants' application for interim relief.

3. Aforesaid writ petition was filed by petitioners-appellants on 15.05.2017 disclosing status of petitioner no. 2, Devendra Pal Verma, as President, Arya Pratinidhi Sabha (petitioner no. 1), challenging order of Deputy Registrar, Firms, Societies and Chits, Lucknow dated 09.11.2016.

4. Learned Senior Advocate appearing for appellants, when apprised of the fact that this is an order rejecting application for interim relief and, therefore, is not appeallable under Chapter VIII Rule 5 of Rules, 1952 since it cannot be said to be a "judgment", he stated that since findings are recorded against petitioners with regard to concealment of material facts, therefore, it is all trapping of judgment and appeal lies.

5. However, we find ourselves unable to be persuaded by this argument.

6. Whenever an application for interim relief is considered and some aspects are discussed, it is only confined to the question, whether interim relief should be granted or not. Those observations cannot be said to be an adjudication of rights of parties so as to render the order passed on interim application, a "judgment". Therefore, we have no hesitation in holding that order impugned in this appeal is not a "judgment" and hence no appeal lies against such order under Chapter VII Rule 5 of Rules, 1952.

7. However, learned Senior Advocate insisted to consider appeal on merits and stated that there is no concealment. He says that whatever transpired after order dated 09.11.2016, it was not relevant and appellants were not supposed to disclose the same. Learned Single Judge, therefore, has erred in law in treating subsequent events as concealment of material facts. In this regard he placed reliance on Supreme Court's judgment judgments in Beg Raj Singh Vs. State of U.P. and others, 2003(1) SCC 726 and Arunima Baruah Vs. Union of India and others, 2007(6) SCC 120.

8. It is no doubt true that against order dated 09.11.2016 appellants initially filed a writ petition at Allahabad but when Court found that territorial jurisdiction lies at Lucknow, that writ petition was dismissed with liberty to file at Lucknow and thereafter present writ petition was filed at Lucknow on 10.05.2017. In the meantime admittedly Society held a meeting on 26.03.2017 and General Body expelled petitioner no. 2 for a period of 6 years from membership of General Body of Society. Thereafter petitioner no. 2, who has described himself as President, Artya Pratinidhi Sabha (petitioner no. 1) moved an application before Deputy Registrar challenging resolution dated 26.03.2017 and Deputy Registrar vide order dated 30.03.2017 stayed said resolution.

9. Order of Deputy Registrar dated 30.03.2017 was challenged in Writ Petition No. 7613 (M/S) of 2017 and this Court vide order dated 12.04.2017 stayed order dated 30.03.2017.

In May, 2017 when petitioners-appellants filed writ petition the fact was that petitioner no. 2 was not member of General Body of Society, hence had no right to describe himself as President, Arya Pratinidhi Sabha. In any case, since entire subsequent events were within the knowledge of petitioners-appellants and the same had a material bearing in the matter, in our view, it would incumbent upon petitioners-appellants to disclose those subsequent events in writ petition which was filed subsequently, i.e., in May, 2017.

10. Judgment of Supreme Court in **Beg Raj Singh Vs. State of U.P. (supra)** in para 7 itself says that, "*petitioner, though entitled to relief in law, may yet be denied relief in equity because of subsequent or intervening events i.e. the events between the commencement of litigation and the date of decision*". In the present case subsequent events are referable to order dated 09.11.2016 which was challenged in writ petition. It means that these events had already occurred before filing of writ petition. Therefore, in that sense they may not be said to be subsequent events but the events which had already transpired before filing of writ petition. The same having material impact on the matter, it was incumbent upon appellants to disclose same. Hence, we do not find any manifest error even otherwise on the part of learned Single Judge in rejecting application for interim relief.

11. Appeal lacks merit. Dismissed.

Order Date : 25.5.2017

AK

निजामुद्दीन औलिया दरगाह का सच

– डॉ० विवेक आर्य

पिछले दिनों समाचार पत्रों में दिल्ली की निजामुद्दीन औलिया के दो खदिमों के पाकिस्तान जाने और गायब होने की खबर छपती रही है, हालांकि दोनों खादिम बाद में मिल गए थे। चूँकि यह मामला निजामुद्दीन औलिया की दरगाह से सम्बंधित था। इसलिए मीडिया द्वारा प्राथमिकता से इसे उठाया गया। मगर निजामुद्दीन दरगाह के इतिहास से सम्बंधित कुछ तथ्यों को मैं इस लेख के माध्यम से प्रकाश में लाना चाहता हूँ।

प्रायः किसी भी दैनिक अखबार को उठा कर देखिये आपको पढ़ने को मिलेगा कि आज हिंदी फिल्मों का कोई प्रसिद्ध अभिनेता या अभिनेत्री अजमेर में गरीब नवाज अथवा निजामुद्दीन औलिया की दरगाह पर चादर चढ़ा कर अपनी फिल्म के हिट होने की मन्नत माँगने के लिए गया। भारतीय समाज में एक विशेष आदत है, वह है अंधा अनुसरण करने की। क्रिकेट स्टार, फिल्म अभिनेता, बड़े उद्योगपति जो कुछ भी करें, उसका अंधा अनुसरण करना चाहिए चाहे बुद्धि उसकी अनुमति दे चाहे न दे।

दिल्ली के एक कोने में निजामुद्दीन औलिया की दरगाह है। १९४७ से पहले इस दरगाह के हाकिम का नाम ख्वाजा हसन निजामी था। आज के मुस्लिम लेखक निजामी की प्रशंसा उनकी उर्दू साहित्य की देन अथवा बहादुर शाह द्वारा १८५७ के संघर्ष पर लिखी गई पुस्तक को पुनः प्रकाशित करने के लिए करते हैं। परन्तु निजामी के जीवन का एक और पहलू था मतान्धता।

धार्मिक मतान्धता के विष से ग्रसित निज़ामी ने हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिए १९२० के दशक में 'एक पुस्तक लिखी थी, जिसका नाम था ''दाइये इस्लाम''। इस पुस्तक को इतने गुप्त तरीके से छापा गया था कि इसका प्रथम संस्करण कब प्रकाशित हुआ और कब समाप्त हुआ इसका मालूम ही नहीं चला। इसके द्वितीय संस्करण की प्रतियां अफ्रीका तक पहुँच गई थी। एक आर्य सज्जन को उसकी यह प्रति अफ्रीका में प्राप्त हुई, जिसे उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी को भेज दिया। स्वामी जी ने इस पुस्तक को पढ़ कर उसके प्रतिउत्तर में एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम था ''खतरे का घंटा''। इस पुस्तक में उस समय के २१ करोड़ हिन्दुओं में से १ करोड़ हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित करने का लक्ष्य रखा गया था।

इस पुस्तक के कुछ सन्दर्भों के दर्शन करने मात्र से ही लेखक की मानसिकता का बोध हमें आसानी से मिल जायेगा कि किस हद तक जाकर हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिए मुस्लिम समाज के हर सदस्य को प्रोत्साहित किया गया था। जिससे न केवल धार्मिक द्वेष के फैलने की आशंका थी, अपितु दंगे तक भड़कने के पूरे आसार थे। आइये, इस पुस्तक के कुछ अंशों का अवलोकन करते हैं।

१. फकीरों के कर्तव्य– जीवित पीरों की दुआ से बे औलादों के औलाद होना या बच्चों का पूरा जीवित रहना या बीमारियों का दूर होना या दौलत की वृद्धि या मन की मुरादों का पूरा होना, बद्दुआओं का भय आदि से हिन्दू लोग फकीरों के पास जाते हैं और बड़ी श्रद्धा रखते हैं। मुसलमान फकीरों को ऐसे छोटे–छोटे वाक्य याद कराये जावें, जिन्हें वे हिन्दुओं के यहाँ भीख मांगते समय बोलें और जिनके सुनने से हिन्दुओं पर इस्लाम की अच्छाई और हिन्दुओं की बुराई प्रगट हो।

२. गाने बजाने वालों को ऐसे–ऐसे गाने याद कराना और ऐसे नये–नये गाने तैयार करना, जिनसे मुसलमानों में बराबरी के बर्ताव की बातें और मुसलमानों की करामातें प्रगट हो।

४. गिरोह के साथ नमाज ऐसी जगह पढ़ना, जहां उनको दूसरे धर्म के लोग अच्छी तरह देख सकें।

५. ईसाइयों और आर्यों के केन्द्रों या उनके लीडरों के यहाँ से उनके खानसामों, कहारों, चिट्ठीरसारों, कम्पाउन्डरों, भीख मांगने वाले फकीरों, झाड़ू देने वाले स्त्री या पुरूषों, धोबियों, नाइयां, मजदूरों, सिलाबतों और खिदमतमारों आदि के द्वारा खबरें और भेद मुसलमानों को प्राप्त करने चाहिए।

६. सज्जादा नशीन अर्थात् दरगाह में काम करने वाले लोगों को मुसलमान बनाने का कार्य करें।

७. ताबीज और गंडे देने वाले जो हिन्दू उनके पास आते हैं, उनको इस्लाम की खूबियाँ बतावें और मुसलमान बनने की दावत दें।

८. देहाती मदरसों के अध्यापक अपने से पढ़ने वालों को और उनके माता–पिता को इस्लाम की खूबियां बतावें और मुसलमान बनने की दावत दें।

९. नवाब रामपुर, टोंक, हैदराबाद, भोपाल, बहावलपुर और जूनागढ़ आदि को उनके ओहदेदारों, जमीदारों, नम्बरदार, जैलदार आदि को अपने यहां पर काम करने वालों को और उनके बच्चों को इस्लाम की खूबियां बतावें और मुसलमान बनने की दावत दें।

१०. माली, किसान, बागवान आदि को आलिम लोग इस्लाम के मसले सिखाएँ क्यँकि साधारण और गरीब लोगों में दीन की सेवा करने का जोश अधिक रहता है।

११. दस्तगार जैसे सोने, चाँदी, लकड़ी, मिट्टी, कपड़े आदि का काम करने वालों को अलीम इस्लाम के मसलों से आगाह करें, जिससे वे औरों को इस्लाम ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित करें।

१२. फेरी करने वाले घरों में जाकर इस्लाम की खूबियां बतायें, दुकानदार दुकान पर बैठे–बैठे सामान खरीदने वाले ग्राहक को इस्लाम की खूबियां बतायें।

१३. पटवारी, पोस्ट मास्टर, देहात में पुलिस ऑफिसर, डॉक्टर, मिल कारखानों में बड़े ओहदों पर काम करने वाले मुसलमान इस्लाम का बड़ा काम अपने नीचे काम करने वाले लोगों में इस्लाम का प्रचार कर सकते हैं।

१४. राजनैतिक लीडर, संपादक, कवि, लेखक आदि को इस्लाम की रक्षा एवं बुद्धि का काम अपने हाथ में लेना चाहिए।

१५. स्वांग करने वाले, मुजरा करने वाले, रण्डियों को, गाने वाले कव्वालों को, भीख मांगने वालों को सभी को इस्लाम की खूबियों को गाना चाहिये।

यहं पर सारांश में निज़ामी की पुस्तक के कुछ अंशों को लिखा गया है। पाठकों को भली प्रकार से निज़मी के दर्शन हो गये होंगे। १९४७ के पहले यह सब कार्य जोरों पर था। हिन्दू समाज के विरोध करने पर दंगे भड़क जाते थे। अपनी राजनीतिक एकता, कांग्रेस की नीतियों और अंग्रेजों द्वारा प्रोत्साहन देने से दिनों–दिन हिन्दुओं की जनसंख्या कम होती गई, जिसका अंत पाकिस्तान के रूप में निकला।

अब पाठक यह सोचें कि आज भी यही सब गतिविधियां सुचारू रूप से चालू हैं। केवल मात्र स्वरूप बदल गया है। हिन्दी फिल्मों के अभिनेता, क्रिकेटर आदि ने कव्वालों, गायकों आदि का स्थान ले लिया है और वे जब भी निजामुद्दीन की दरगाह पर माथा टेकते हैं, तो मीडिया में यह खबर ब्रेकिंग न्यूज बन जाती है। उनको देखकर हिन्दू समाज भी भेड़चाल चलते हुए उनके पीछे–पीछे अनुसरण करने लगता है।

देश भर में हिन्दू समाज द्वारा साई संध्या को आयोजित किया जाता है, जिसमें अपने आपको सूफी गायक कहने वाला कव्वाल हमसर हयात निज़ामी बड़ी शान से बुलाया जाता है। बहुत कम लोग यह जानते है कि कव्वाल हमसर हयात निज़मी के दादा ख्वाजा हसन निज़ामी के कव्वाल थे और अपने हाकिम केक लिए ठीक वैसा ही प्रचार इस्लाम का करते थे, जैसा निजामी की किताब में लिखा है। कहते हैं कि समझदार को ईशारा काफी होता है। यहाँ तो सप्रमाण निजामुद्दीन की दरगाह के हाकिम ख्वाजा हसन निज़ामी और उनकी पुस्तक दाइये इस्लाम पर प्रकाश डाला गया है।

हे प्रभो! हिन्दू समाज कब इतिहास और अपनी गलतियों से सीखेगा?

सत्ताहीन राजा

एक बार एक राजा अपने नगर के भ्रमण के लिए निकाला तो उसको मार्ग में एक फकीर पड़ा हुआ दिखाई दिया। राजा को फकीरों के प्रति श्रद्धा थी। अपनी रथ से उतर कर वह फकीर के पास गया, उसको प्रणाम किया। कुशल समाचार पूछा और फिर कहा–''महात्मा जी! किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो बताइये।''

फकीर बोला–''तू अच्छा आया। ये मक्खियां मुझे तंग कर रही हैं, तनिक इनको तो भगा दें।''

राजा बोला ''महात्मा जी! मक्खियां तो मेरे वश में नहीं हैं। किन्तु यदि आप मेरे साथ चलें तो मैं आपकों ऐसा सुन्दर स्थान दिला सकता हूँ जहाँ मक्ख्यां.....''

राजा का वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि फकीर बोला –'' बस बस! तू जा, अपना काम कर। जिसका तुच्छ मक्खियों पर भी अधिकार नहीं है, उससे मैं क्या माँगू। जा, बस हो गया।''

फकीर ने करवट बदल ली।

महामृत्युंजय–मन्त्रार्थविवेचनम्

– पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनात् मृत्योर मुक्षीय माऽमृतात्।।

ऋ० ७.५९.१२, यजु० ३.६०

शब्दार्थ – हम सभी (सुगन्धिम्) शुद्ध, उत्तमगन्ध, सम्बन्धयुक्त एवं ओजपूर्ण (पुष्टिवर्धनम्) शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक बलवर्धक, जीवन का परिवर्धन, संवर्धन एवं पोषणकर्ता (त्र्यम्बकम्) ऋग्–यजु, साम मन्त्रों द्वारा ज्ञान, कर्म, उपासना भक्ति का उपदेश करने वाले त्रिकालदर्शी, त्र्यम्बकदेव, रूद्ररूप जगदीश्वर की (यजामहे) समर्पित भाव से यजन एवं स्तुति करते हैं। (इव) जैसे (उर्वारूकम्) खरबूजा समयानुसार पूर्णरूपेण पककर स्वतः ही (बन्धनात्) लता के सम्बन्ध से मुक्त हो जाता है, वैसे ही हम भी पूर्ण परिपक्व अवस्था को प्राप्त होकर (मृत्योः) मृत्युभय से अथवा इस मरणधर्मा शरीर अर्थात् सांसारिक बन्धनरूप जनम मरण के चक्र से (मुक्षीय) मुक्त हो जायं परन्तु (आमृतात्) मोक्षरूप अमृतसुख से (मां) कभी अलग न हों।

भगवन्! जैसे खरबूजा लता में लगा हुआ अपने आप पकर समय आने पर लता से मुक्त हो जाता है, वैसे ही हम सभी पूर्ण आयु को भोग कर शरीर से छूटकर मुक्ति को प्राप्त हो। परन्तु मोक्ष की प्राप्ति के लिए अनुष्ठान और परलोक की इच्छा से कभी भी अलग न हों।

ऋग्वेद एक यजुर्वेद का यह विशिष्ट मन्त्र ''मृत्युंजय मन्त्र'' के नाम से प्रसिद्ध है। जिसका अर्थ है –मृत्यु को जीवने वाला। अनेक विद्वान इसे ''महामृत्युञ्जय मन्त्र'' भी कहते हैं। परन्तु इतना तो स्पष्ट ही है कि यह मन्त्र मृत्यु पर विजय प्राप्ति हेतु प्रेरित करता है। आत्मविश्वास जगाता है। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि मृत्यु होगी ही नहीं। मृत्यु तो अवश्य होगी क्योंकि संसार, नश्वर है, अनित्य है, कुछ भी शाश्वत नहीं। जन्म लेने वाले की मृत्यु और मरे हुए का जन्म निश्चित है–

जातस्य हि ध्रवो मृत्युः जन्म मृत्यस्य च।।

गीता २.२७

मृत्यु अवश्यभावी है। बस हमें इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि मन्त्रानुसार आचरण करते हुए मृत्यु पूर्ण अवस्था भोगकर आनी है, पहले नहीं। वेद में मनुष्य की आयु सौ वर्ष वर्णित है–

जीवेम शरदः शतम्।। यजु० ३६/२४

हम सौ वर्ष तक जीवित रहे।

भूयश्च शरदः शतात्।। यजु० ३६/२४

सौ वर्ष से अधिक जीवित रहने पर भी हम भली–भाँति स्वस्थ एवं आनन्दपूर्वक रहें। यह है पूर्ण आयु। वस्तुतः आहार, व्यवहार, सदाचार आदि नियमों का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करें तभी शतायु हो सकते हैं और हमारी प्रार्थना सार्थक और सफल कही जा सकती है।

अतः योगीराज श्रीकृष्ण कहते हैं–

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्ठस्यकर्मसु। युक्त स्वर नावबोधस्य योगो भवित दुःखहा।। गीता६/१७

दुखों को नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार और विहार करने वाले का तथा कर्मों में यथायोग्य चेष्ठा करने वाले का और यथायोग्य शयन करने तथा जागने वाले का ही सिद्ध होता है।

नियमबद्ध व्यक्ति का जीवन शतायु प्राप्त करने में अवश्य सफल हो सकता है।

मृत्युकाल अर्थात् प्रयाण के सयम यदि इस संसार का साहचर्य, आकर्षण व्यक्ति को ईप्सित और लिप्सित कर रहा हो तो निश्चित ही व्यक्ति मृत्युलोक के तीव्र आकर्षणों, प्रलोभनों की रज्जू में बंधकर पुनः इहलोक में अंकुरित होगा अर्थात् जन्म लेगा। प्राणियों, सम्बन्धियों और पदार्थों की कामनाएं उसे बांधे रहेंगी। वह दिव्य लोकों की ओर गति नहीं कर सकेगा। अतः अन्तिम समय से पूर्व ही जब व्यक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या–द्वेष, आकर्षण, वा सना, सांसारिक पदार्थों के प्रति लिप्सा एवं बन्धनों को काट देगा तभी वह मुक्ति की ओर अग्रसर हो सकेगा।

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते है–

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थित प्रज्ञस्तदोच्यते
।।२/५५।

हे अर्जुन! जब मनुष्य मन में स्थित सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग देता है, उस समय आत्मा से आत्मा में सन्तुष्ट हुआ स्थिर बुद्धि वाला कहा जाता है।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरूच्यते।।२.५६

दुःखों के प्राप्त होने पर जिसका मन व्याकुल नहीं होता, सुखों की प्राप्ति होने पर जिसकी लालसा नहीं होती, जिसके भय, क्रोध, अनुराग नष्ट हो गए हैं, ऐसा मुनि स्थिर बुद्धि कहा जाता है।

ध्यायतो विषयान् पुंस सऽगस्तेषूपजायते।
सङगात् संज्ञायते कामः कामात् क्रोधेऽभिजायते।।
२/६२

विषयों का चिन्तन करने वाले पुरूष की उनक विषयों में आसक्ति हो जाती है और आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है। कामना में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है।

क्रोधाद भवित सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः।
स्मति भंशाद बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात प्रणश्यति।।
२/६३

क्रोध से अज्ञान उत्पन्न होता है और अज्ञान से स्मृति अर्थात स्मरणशक्ति भ्रमित हो जाती है, स्मृति के भ्रमित हो जाने से बुद्धि का नाश हो जाता है, बुद्धि के नाश होने से मनुष्य अपने श्रेय साधन से गिर जाता है।

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरित निः स्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति।।२.७।।

जो पुरूष सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग कर ममता अहंकार और लालसा रहित होकर वर्तता है, वह शक्ति को प्राप्त होता है। वस्तुतः यह है मुक्ति की ओर अग्रसद् होने की विधि। ऐसा व्यक्ति ही मृत्यु पर विजय प्राप्त कर अमृत की ओर कदम बढ़ायेगा और कहेगा –''हे प्रभो!

मृत्योर्माऽमृतं गमच। मृत्यु से अमृत की ओर ले चलो।''

हे त्र्यम्बकरूप परमात्मन् देव! खरबूजों के समान हमारा चैतन्य पिण्ड किसी भी वासना बेल, इच्छित कामनालता अथवा लिप्सा के आकर्षण सूत्र से बंधने न पाएं हमें ऐसा विज्ञान सामर्थ्य प्रदान कर कृतार्थ करें। आप हमारी योग साधना के परिणाम स्वरूप हमें मृत्यु से मुक्त करके अमृत्व की ओर उन्मुख करें।

योग साधकों के लिए यह अत्यन्त सिद्ध मन्त्र है। इसे विधिवत् समझकर शुद्ध साधना द्वारा स्वयं को उसी के अनुरूप रूपान्तरित करें।

यदि गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाय तो प्रतीत होता है कि स्वाभाविक और उचित मृत्यु वही होती है जिसमें शरीर इस प्रकार सहज में ही छूट जाता है, जैसे पका हुआ फल डाल से टूट कर गिर जाता है। हम चाहते हैं कि हमारी मृत्यु ऐसी ही हो।

वस्तुतः पूरा पका हुआ फल अधिक से अधिक अपनी पुष्टि को प्राप्त कर चुका होता है, जो उसे वृक्ष से मिलनी चाहिए थी। साथ ही पकने पर उसमें मनोहर सुगन्ध भी जाती है। उस समय उसे अलग करने के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता। वह अपने आप ही अलग हो जाती है। हम भी यही चाहते हैं कि इसी प्रकार हमारी स्वाभाविक मृत्यु हो। हे त्रिकालदर्शी रूद्ररूप भगवन्! इसीलिए हम आपक यजन–स्तुति करते हैं। इस यजन के करने से पकते जाएंगे अर्थात् परिपक्व अवस्था। वार्धक्य को प्राप्त हो जाएंगे। हे सुन्दर गन्धदायक एवं पुष्किारक प्रभो! हम आपकी उपासना करते हैं। आपकी उपासना से हम परिपक्व अवस्था को निर्विघ्न प्राप्त हो, पुष्टि से हम परिपक्व अवस्था को निर्विघ्न प्राप्त हो, पुष्ठि से भी युक्त हो। इस पकी हुई अवस्था में शरीर को छोड़ना दुःखदायी नहीं अपितु स्वाभाविक और शान्तिदायक सिद्ध होगा। किसी को किसी प्रकार का दुःख न होगा। प्रभो! हमें ऐसा परिपक्व और सुगन्धितयुक्त कर दो कि हम मरते हुए भी आपकी अमृतमयी गोद से कभी अलग न हों।

महामृत्युञ्जय! महारूद्र! त्राहि मां शरणागतम्।
जन्म–मृत्यु जरा–रोगैः पीड़ित कर्मबन्धनैः।।

हे महामृत्युञ्जय! हे महारूद्ररूप परमेश्वर! परमेश्वर! जन्म, मृत्यु तथा वार्धक्य आदि विविध रोगों एवं कर्मों के बन्धनों से पीड़ित मैं आपकी

शेष पृष्ठ ८ पर

वैदिक धर्म ही वास्तविक मानव धर्म है

– श्री श्यामसिंह आर्य 'वेदनिपुण'

मानवता ही मानव का मूल धर्म है। धर्म क्या है? 'धयति इति धर्मः' अर्थात् जिन गुणों को मानव धारण करे, ठीक उसी तरह जिस तरह से 'अग्नि' ने अपने 'अग्नित्व' के गुण को धारण कर रखा है। यह 'अग्नित्व' का गुण ही 'अग्नि' धर्म है। यदि अग्नि से इसके इस गुण को अलग कर दिया जाए तो वह अग्नि न रहकर राख मात्र रह जायेगी। इसी तरह मानव को भी अपने मानवता के गुण दया, अहिंसा, सदाचार, परोपकार आदि को हमेशा धारण करना चाहिए। मानव को असत्य, छल कपट जैसे पाप कर्मों से दूर रहते हुए निश्छल हृदय से उस परमपिता परमात्मा का स्मरण करना चाहिए।

मानव को जन्म से ही बुद्धि, चेतना तथा देखने–सुनने एवं मनन करने की शक्ति मिली है। 'मत्वा कर्माणि सीव्यति' अर्थात् जो सोच विचारकर कर्म करे, मानव कहलाता है। पशु और मानव में यही अन्तर है कि पशु को अच्छे बुरे कर्म का विवेक नहीं होता। जंगल में शेर जानवरों का शिकार करता है क्योंकि वह 'अहिंसा परमो धर्मः' को नहीं जानता। घर के अन्दर बिल्ली नन्हें मुन्हें राजा बेटे के रखे दूध को चुपके चुपके पी जाती है क्योंकि उसे 'अस्तेय परमव्रत' (चोरी न करने) का विवेक नहीं। देखा जाए तो मानव का कर्त्तव्यपालन ही उसका धर्म है। मानव के मुख्यतः चार कर्तव्य होते हैं पहला स्वयं के प्रति, दूसरा अपने परिवार के प्रति, तीसरा समाज व देश के प्रति तथा चौथा धर्म के प्रति। इनमें से यदि वह किसी भी एक का ठीक ढंग से कर्तव्यपालन नहीं करता तो वह उसकी वैदिक मानवधर्म के प्रति अवज्ञा है। मनु की संतान मननशील होने के कारण ही मानव है। मनु महाराज ने मानव को जो दस धर्म के लक्षण बताये है, वे सभी के लिए है–

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्दियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशंक धर्मलक्षणम्।।

अर्थात् धृति–धैर्य रखना, क्षमा–निंदा, स्तुति, मान–अपमान, लाभ–हानि आदि में सहनशील रहना। दम–मन को अधर्म से रोकर धर्म में प्रवृत्त करना। धरतेय–मोदी न करना, शौच–राग द्रेषादि को छोड़कर अन्तर की शुद्धि तथा जलादि से बाह्म शरीर की शुद्धि करना। इन्द्रियानिपद्र–अधर्म के आचरण से इन्द्रियों को रोकर धर्म में ही चलाना। थ्री–बुद्धिनाशक पदार्थ तथा दाणे का संग, आलस्य–प्रमाद आदि को छोड़कर श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन, सत्पुरूषों का साथ, योगाभ्यास आदि से बुद्धि से बुद्ध करना। विद्या–पृथिवी से परमेश्वर पर्यन्त जो भी यथार्थ ज्ञान है, उसको यथायोग्य उपकार में लगाना। अक्रोध–अक्रोध आदि दोषों को छोड़कर शान्त गुणों को धारण करना।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्य व्यवहार को ही कर्मशास्त्र में मुख्यधर्म कहा है तथा मनु के दस लक्षणों में उन्होंने 'अहिंसा' को भी जोड़ते हुए धर्म के ग्यारह लक्षण हमें बताये हैं। अहिंस–किसी से बैर करके उसके अनिष्ठ करने में कभी न बर्तना। मानव का अपना कर्तव्यपालन करना ही उसका धर्म है। धर्म किसी भी तरह की पूजा पद्धति, कर्मकाण्ड अथवा अन्य विधिविधान का नाम न होकर उन कर्त्तव्यों (कर्मों) को करना है जो मानव को इहलोक ओर परलोक दोनों में सुख प्रदान करे तथा जिनसे मानवमात्र का कल्याण होता है।

वेदों में परमात्मा ने मानव को जिन कर्मों के करने की आज्ञा दी है वह धर्म और जिनके करने का निषेध किया गया है, वह है अधर्म। महर्षि कणाद कहते हैं– 'यतोऽभुदयनिः स धर्मः' अर्थात् जिन कर्मों से मानव की लौकिक और परलौकि सुख (मोक्ष) दोनों की प्रप्ति हो, वही धर्म है। यज्ञ, उपचार, अहिंसा, तप और स्वाध्याय करना भी धर्म है लेकिन योगाभ्यास के द्वारा आत्मा परमात्मा का साक्षात् करना परम धर्म है। धर्म के जो ये वेदोक्त लक्षण है, जिनमें मानवमात्र का कल्याण सम्भव है, का अवश्य पालन करें।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। (ऋ० १०/१९१/२)

अर्थात् (संगच्छध्वं) देखो, परमेश्वर हम सभी के लिए धर्म का उपदेश करता है कि हे मनुष्यों! जो पक्षपातरहित न्याय सत्याचरण से युक्त धर्म है, तुम लोग उसी को ग्रहण करो, उससे विपरीत कभी मत चलो, किन्तु उसी की प्राप्ति के लिए विरोध को छोड़कर परस्पर सम्मति से रहो जिससे तुम्हारा उत्तम सुख हर दिन बढ़ता जाये और किसी प्रकार का दुःख न हो। (संवदध्वं) तुम लोग विरूद्धवाद को छोड़कर परस्पर अर्थात् आपस में प्रीति के साथ पढ़ना–पढ़ना, प्रश्न–उत्तर सहित संवाद करो, जिससे तुम्हारी सत्यविद्या नित्य बढ़ती रहे। (स वो मनांसि जानताम्) तुम लोग अपने यथार्थ ज्ञान को नित्य बढ़ाते रहो, जिससे तुम्हारा मन प्रकाशयुक्त होगा। पुरूषार्थ को नित्य बढ़ओ, जिससे तुम लोग ज्ञान होकर नित्य आनन्द में बने रहो और तुम लोगों को धर्म का ही सेवन करना चाहिए, अधर्म का नही। (देवा भागं) जैसे पक्षपात रहित धर्मात्मा विद्वान लोग वेद रीति से सत्यधर्म का आचरण करते हैं, इसी प्रकार तुम भी करो। क्योंकि धर्म का ज्ञान तीन प्रकार से होता है–एक तो धर्मात्मा विद्वानों की शिक्षा दूसरा आत्मशुद्धि तथा सत्य को जानने की इच्छा और तीसरा परमेश्वर की कही वेदविद्या को जानने से ही मनुष्यों को सत्य–असत्य का यथावत बोध होता है अन्यथा नहीं (ऋ०भू० ६२–६३ वेदोक्त धर्म)

धर्म की कसौटी यह है कि जो किसी देश, जाति अथवा वर्ग विशेष वर्ग विशेष के हित की बात न कहकर मानवमात्र के कल्याण की बात कहे अर्थात् जिसमें सार्वभौमिकता के गुण विद्यमान हों, वही सत्य धर्म है। वैदिक मानव धर्म ही इस पर खरा उतरता है। वर्तमान काल में मिथ्या मत–मतान्तरों तथा गुरूडमों ने भी अपने को धर्म का नाम देकर धर्म को इतना बदनाम कर दिया है कि मनुष्य अधर्म (सम्प्रदायवाद) को ही धर्म समझकर तथा उनके रंग–ढंग को देखकर धर्म से नफरत करने लगा है।

'नास्ति सत्यात्परो धर्मः' अर्थात् सत्य से श्रेष्ठ कोई धर्म नहीं। जो सत्य की बात करे समझो धर्म की बात कह रहा है। सत्य और धर्म में कोई फर्क नहीं होता अर्थात् सत्य ही धर्म हैं परमेश्वर के अटल नियम भी सत्य है, उनका पालन करना धर्म तथा उल्लंघन करना अधर्म है। मानव के अंदर करना धर्म तथा उल्लंघन करना अधर्म है। मानव के अंदर काम, क्रोध लोभ, मोह और अहंकार रूपी जो पांच विकार है, ये ही मानव के धर्म मार्ग में बहुत बड़े रोड़े हैं। मानव को इनपर विजय प्राप्त करके सवयं अपने, अपने परिवार तथा समाज के परिवेश को कल्याणकारी बनाना चाहिए। यही मानव का कर्तव्य भी है तथा यही उसका धर्म भी है। आपस में एक दूसरे के प्रति आदरभाव, समर्पण का भाव जब रहेगा तो सभी में परस्पर प्रेम होगा। जब व्यक्ति अपने अधिकारों की तरफ तो देखे, लेकिन अपने कर्तव्यों की अनदेखी करे तभी आपस में कटुता पैदा होती है। प्रेम तथा स्नहे वहाँ नहीं रहता। जहाँ पर स्नहे होता है, वहाँ कुछ देने की लालसा होती है लेने की नहीं, जिस तरह माता अपने पुत्र से स्नेह करती है। जरा प्रकृति की तरफ भी देखिए। एक वृक्ष सिर्फ हमें देता ही देता है प्राणवायु, वर्षा, फल, छाया, लकड़ी तथा औषधि आदि। सूर्य–चन्द्रमा, नदी सागर, पर्वत सभी अपने–अपने कर्तव्यों का पालन बिना किसी लालसा के निरन्तर करते रहते हैं तथा परमात्मा के अटल नियामें को बनाये रखते हैं। इसी तरह मानव को भी अपने कर्तव्यों का पालन निष्ठापूर्वक करते रहना चाहिए, जिससे यह समाज व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहे।

धर्म का सार यह है कि 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत' अर्थात जो व्यवहार हमें अपने लिए अच्छा नहीं लगता, उसे दूसरों के साथ भी न किया जाये। जिन कार्यों को करने में हमारी आत्मा की साक्षी ना हो अर्थात् जिन्हें करने से हमारे अन्तःकरण में भय, लज्जा, तथा ग्लानि के भाव उत्पन्न हों, वह कार्य नहीं करना चाहिए। जिसे करने से अन्तःकरण में हर्ष और उल्लास की अनुभूति हो वही धर्म कार्य है, उसे सदैव किया करे। धर्मज्ञान हेतु वेद, वेदों के अनुकूल स्मृति, सज्जन पुरूषों का आचार तथा आत्मा की अनुकूलता, ये चार प्रमाण धर्म निर्णय के लिए बनाये गये हैं। धर्म को भी हमें पहले तर्क की कसौटी पर कस लेना चाहिए। जो मानव को पूर्ण बनाकर दिव्य गुणों की ओर ले जाए वही सच्चा धर्म होता है तथा यही धर्म अन्तिम समय में मानव के साथ जाने वाला गुण है। सत्य से धर्म उत्पन्न होता है तथा दया और दान से यह बढ़ता है। क्षमा से स्थिर रहता है तथा क्रोध से यह नष्ट हो जाता है। यह मानव शरीर अनित्य है मृत्यु अवश्यभावी है। अतः हे मानव! तू सदा रहने वाले धर्म का पालन करें।

प्रभु की कृति में उसे देखने वाले का मन विषयों से बचता है

– डा० अशोक आर्य

ऋग्वेद के पंचम सूक्त में बताया गया था कि हम सोम को शरीर में सुरक्षित कर ईशान बने व सामूहिक रूप से प्रभु की प्रार्थना करें। इन सुरक्षित शरीरों (जिनमें हमारा शरीर, हमारा मन तथा हमारी बुद्धि भी सम्मिलित है) को हम किन कार्यों में, किन कर्मों में लगाएँ, व्यस्त करें? हमारी इस जिज्ञासा का, इस बात को जानने का जो यत्न है, इसका उत्तर इस मण्डल के सूक्त छः में दिया है। अतः इसक जाने के लिए सूक्त छः का स्वाध्याय हम इस छोटे सूक्त के प्रथम मन्त्र से करते हैं। मन्त्र उपदेश करता है कि–

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः।
रोचन्ते रोचना दिवि।। ऋ.१.६.१।।

इस मन्त्र में पाँच बातों की ओर मानव का ध्यान आकर्षित करते हुए इस प्राकर उपदेश किया गया है।

1. **सूर्य सम्बन्धी ज्ञान**– ऊपर ईशान बनने के लिए प्रेरित किया गया है। ईशान बनने के लिए दूसरे शब्दों में इन्द्रियों को विभिन्न प्रकार की वासनाओं से, विषयों से रोकने के लिए अभ्यास करने वाले अपने मन आदि को ब्रध्न में अर्थात आदित्य व सूर्य में लगाते हैं क्योंकि यह ही ब्रध्न है। इस प्रकार जब यह अपने मन को सूर्य में लगाते हैं तो यह लोग सूर्य सम्बन्धी सब ज्ञान को पाने का यत्न करते हैं। सूर्य क्या है? इसकी क्या बनावट है? इसके क्या लाभ है? यह कैसे गति करता है? आदि इन सब बातों को जानने का यत्न करते हैं। इस प्रकार सूर्य सम्बन्धी सब ज्ञान को पाते हैं तथा यथावश्यक सूर्य से लाभ प्राप्त करते हैं और इस से मिलने वाले प्रभु की महिमा उन्हें दिखाई देती है, वह उस महिमा को देखते हैं।

2. **अग्नि प्रभु के गुणों का दर्शन**– सूर्य का सम्बन्ध अग्नि से होता है। अतः यह अपना सम्बन्ध अग्नि से जोड़ने का यत्न करते हैं। अपने मन को अग्नि में लगाते हैं अब यह अग्नि विज्ञान का भी विशद् अध्ययन करते हैं। इसके रहस्यों को भली प्रकार समझ कर अपने मन को इस में लगाते हैं। अग्नि में लगा हुआ यह मन प्रसंगवश जो विषय आ जाते है, उन सब से हमारा यह मन बचा रहता है। जब मन विषयों से दूर होकर अग्नि में लग जाता है तो यह मन अग्नि का ठीक प्रकार से, उत्तम विधि से प्रयोग करता हुआ यह अग्निविद्याविद् पुरुष होने से अग्नि में भी उस प्रभु के महात्म्य का उस प्रभु की महिमा का, उस प्रभु के गुणों का दर्शन है।

3. **वायु में प्रभु की महिमा**– अग्नि के रहस्यों को समझ व उन्हें आत्मसात करने के पश्चात् हमारा यह मन वायु को जानने का यत्न करता है। यह वायु विज्ञान के अन्तर्गत वायु के गुणों को भी समझने का प्रयास करता है। वायु के ज्ञान को पाने पर यह इस का जब सदुपयोग करता है तो इससे हमारे स्वास्थ्य को पुष्टि मिलती है। हम स्वस्थ व पुष्ट हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में हमें वायु में भी उस प्रभु की महिमा दिखाई देने लगती है। हम वायु को भी देव स्वीकार कर लेते हैं।

4. **अधिष्ठानभूत लोकों का ज्ञानः** वायु के रहस्यों को समझने तथा इन्हें आत्मसात करने के पश्चात् यह मधुछन्दा रूपी जीव अपने मन को अनेक प्रकार के विषयों में फँसने से बचाना चाहता है तथा इस हेतु वह इसे इन लोकों के ज्ञान की प्राप्ति में व्यस्त करता है लगाता है। वह देखता है कि अग्निदेव का निवास पृथिवी पर होता है। जिसे वह वायु रूपी देव स्वीकार कर चुका है, उस देव का निवास अन्तरिक्ष कर चुका है, उस देव का निवास अन्तरिक्ष में होता है तथा अग्नि का प्रतीक जिसे उसने सूर्य को स्वीकार किया है, उसका निवास दयुलोक में होता है।

एक ज्ञानी व्यक्ति अपने मन को जहाँ अग्नि, वायु तथा अग्नि के ज्ञान को पाने में लगाता है। इन सब के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी पाने का यत्न करता है वहां वह इन सब के अधिष्ठानभूत लोकों का, उन लोकों का जो इन सब के अधिष्ठाता कहे जाते है, जिनके सहारे यह सब टिके है, उन सबका भी ज्ञान पाने का, उन्हें भी विस्तृत रूप से पाने का यत्न करता है। हम जानते हैं कि खाली मन शैतान का घर होता है। जब हमारा मन इन सब प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करने में लग जाता है तो इस मन के पास अन्य किसी ओर जाने का समय ही नहीं होता। जो व्यक्ति सदा कर्म में लगा रहता है, अपने आप को किसी न किसी कार्य में व्यस्त रखता है, उसके समाने से हाभी भी निकल जाये तो उसे पता नहीं चलता। इस प्रकार के व्यस्त मन का ध्यान कभी विषय–विकारों की ओर जाएगा, यह तो कोई सोच भी नहीं सकता। अतः ऐसा मन विषयों के दोष से बचा रहता है। कभी विषयों की ओर जाता ही नहीं।

5. **तारों में प्रभु की कांति :** मन्त्र का अन्तिम भाग बता रहा है कि जब मन सब प्रकार से व्यस्त रहता है तथा इन सब के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान पाने का यत्न करता है, सदा इस ज्ञान को पाने में व्यस्त रहता है तो यह इन देदीप्यमान नक्षत्रों में लगता है। यह सब नक्षत्र दयुलोक में सदा चमकते हुए दिखाई देते हैं। ये नक्षत्र आकाश को अच्छादित करते है, आकाश इन नक्षत्रों इन तारों से भर जाता है। यह तारे भी तो उस प्रभु का ही स्तवन कर रहे है, उस प्रभु के गुणों का गायन कर रहे हैं। उसका ही कीर्तन करते से दिखाई देते हैं। तारों में भी प्रभु की कांति दिखाई देती है।

इस प्रकार यह ज्ञानी मन, यह ज्ञानी पुरुष सदा ज्ञान को पाने का यत्न करता रहता है, ज्ञान प्राप्ति में व्यस्त रहता है। इस कार्य के लिए यह सूर्य, अग्नि, वायु, द्युलोक, पृथिवीलोक, अन्तरिक्ष लोक व नक्षत्रों आदि में भी प्रभु की महिमा को देखकर, उसकी इस महान् कृति को देखकर वह उस पिता के आगे नत हो जाता है, अपनी सिर उस पिता की इस कारागरी के आगे झुका लेता है, वह जान जाता है कि वह प्रभु कितना महान् है। उकसी महानता के आगे वह नत हो जाता है। जहाँ वह प्रभु की इस कारागरी को समझने के कारण वह उसके आगे नत हो जाता है, वहाँ इस ज्ञान को पाने के निरन्तर यत्न से उसका ध्यान वासनाओं की ओर नहीं जा पाता। वासनाओं से बचे रहने के कारण वह ईशान भी बना रहता है। कर्मशील का मन विषयों में जाने से बचा रहता है।

पंकज आर्य को बधाई!

उ०प्र० माध्यमिक शिक्षा चयन बोर्ड द्वारा प्रकाशित स्नातक परीक्षा में हसनपुर जिला–अमरोहा निवासी पंकज कुमार आर्य सुपत्र श्री लाखन सिंह चौहान का चयन हुआ है। उनके चयन से आर्य जनता व संस्कृत जगत में खुशी का माहौल है। पंकज कुमार चौहान अपना जीवन संस्कृत के प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित करते हुए सैकड़ों बच्चों का मार्गनिर्देशन किया है। आर्य मित्र परिवार की ओर से उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ बहुत–बहुत बधाई।

सम्पादक मण्डल
आर्य मित्र

सार्वदेशिक आर्यवीर का राष्ट्रीय शिविर

५ जून से २० जून, २०१७
स्थान–गुरूकुल पौन्धा, देहरादून (उत्तराखण्ड)

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत सरस्वती की अध्यक्षता में शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। प्रवेशार्थी आर्यवीर दल या आर्यसमाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र, २ फोटो एवं पहले उत्तीर्ण परीक्षा के प्रमाणपत्र की प्रतिलिपि साथ लेकर आयें। शिविर के अनुशासन का पूर्णतः पालन करना होगा। अनुशासन भंग करने पर शिविरार्थी को शिविर से पृथक् भी किया जा सकता है।

प्रवेश शुल्क ५०० रू०
पाठ्यपुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

आवश्यक सामान–गणवेश खाकी हाफपैण्ट, सफेद शर्ट, सैण्डो बनिया, सफेद जूते, सफेद मोजे, लंगोट, लाठी, नोटबुक, हलका बिस्तर, थाली, लोटा एवं दैनिक उपयोग में अपने वाली वस्तुयें।

नोटः– १. शिविर में प्रवेश आर्यवीर श्रेणी उत्तीर्ण को ही दिया जायेगा। शिविरार्थी की योग्यता मैट्रिक उत्तीर्ण होनी चाहिए। शिविर में प्रथम श्रेणी को प्रवेश नहीं मिलेगा।

२. ११ जून को मध्य परीक्षा होगी जिसमें उत्तीर्ण आर्यवीर को अगली श्रेणी का प्रशिक्षण दिया जायेगा। उत्तीर्ण न होने वाले आर्यवीर जिस श्रेणी में हैं उसी का प्रशिक्षण लेते रहेंगे।

३. शिविर में सन्ध्या–यज्ञ एवं प्राथमिक चिकित्सा तथा व्यक्तित्व विकास का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा।

मार्ग–देहरादून रेलवे स्टेशन या बस स्टैण्ड से बल्लूपुरा चौक, प्रेमनगर, नन्दा की चौकी से पौन्धा ग्राम जाने वाले वाहन से गुरूकुल पौन्धा पहुँचे।

धनञ्जय आचार्य	नन्दकिशोर शास्त्री	सत्यवीर आर्य	स्वामी प्रणवानन्द
शिविर संयोजक	प्रधान व्यायाम शिक्षक	महामन्त्री सार्व.आ.वी.द.	संरक्षक
६४१११०६१०४	६४६६४३६२२०	६४१४७८६४६१	९८६८८५५१५५

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्स: ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३[illegible]२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....

पृष्ठ ५ का शेष

महामृत्युंजय–मन्त्रार्थविवेचनम्

शरण में आया हूँ। आप मेरी रक्षा करें। मेरा उद्धार करें।

भगवन! आप त्र्यम्बकं अर्थात् तीनों लोकों की आँख हैं। उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के अधिद्रष्टा हैं। हमारी यथार्थ अवस्था स्थिति से सम्यक् प्रकार परिचित हैं। अतः आप हमारा मृत्युभय से छुटकारा अवश्य करें, पर अपनी अमृतमयी गोद से कभी बिछड़ने न दें।

वस्तुतः पूर्ण परिपक्व अवस्था तक वही व्यक्ति पहुँच सकता है जिसमें पूर्ण रूपेण शारीरिक क्षमता हो, स्वस्थ हो, मानसिक और बौद्धिक रूप से पूर्णतः समर्थ हो। निराशा, हताशा, आलस्य, प्रमाद का नामोनिशान न हो। परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को ढाल सके। आत्मविश्वास, उत्साह, साहस से परिपूर्ण हो। सकारात्मक सोच रखते हुए जीवन व्यतीत करे। दुष्कर्मी से दूर रहे। अपने आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहे, तभी की गई प्रार्थना सार्थक हो सकती है।

प्रार्थना की सार्थकता के लिए गीता में श्रीकृष्ण ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात कही है–

प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव।
भ्रवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम्।।८.१०

अन्तकाल में वह भक्ति युक्त पुरुष योगबल से भृकुटी के मध्य में प्राण को अच्छी प्रकार स्थापन करके निश्चल मन से स्मरण करता हुआ उस दिव्यस्वरूप परम पुरुष परमात्मा को ही प्राप्त होता है। कठोपनिषद् में भी मोक्ष परमगति का स्वयप स्पष्ट करते हुए कहा गया है।

यदा पंञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह।
बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम्।।२.६.१०

जब शुद्ध मनयुक्त पांच ज्ञानेन्द्रिय जीव के साथ रहती हैं और बुद्धि का निश्चय स्थिर होता है, उसको परमगति अर्थात् मोक्ष कहते हैं। मोक्ष की प्राप्ति कब होगी? इसका स्पष्टीकरण प्रस्तुत है–

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
श्रीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।।
मुण्डक २.२.८।

जब इस जीव के अविद्या–अज्ञानरूपी गाँठ कट जाती है, सब संशय छिन्न हो जाते हैं और दुष्टकर्म क्षय को प्राप्त होते हैं, तभी उस परमात्मा में निवास करता है, जो कि अपने आत्मा के भीतर व्याप रहा है। अतः मन, इन्द्रिय आदि को वश में रखते हुए, दुष्टकर्म त्याग कर बुद्धि को स्थिर करके, हम उस त्र्यम्बक अर्थात् त्रिकालदर्शी परमात्मा का ही आश्रय हों। हमारे लिए यही श्रेयस्कर है।

एतदालम्बनं श्रेष्ठं एतदालम्बनं परम्।
एतदालम्बन ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।।

ओ३म्

।।कृण्वन्तो विश्वमार्यम।।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ

के तत्वावधान में

बृहद् योग शिविर का आयोजन

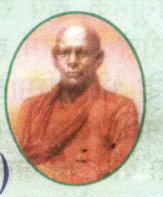

दिनांक – 09, 10, 11 एवं 12 जून 2017 (तदनुसार शुक्रवार से सोमवार तक)

स्थान–महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़तल्ला, जिला–नैनीताल

अध्यक्षता– डा० धीरज सिंह, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ मो० ६४१२७४४३४१

मुख्य अतिथि– मा० पूज्य स्वामी यतीश्वरानन्द जी–विधायक हरिद्वार (ग्रामीण)

योग संचालक– स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती– मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० लखनऊ मो० ६८३७४०२१६२

शिविर व्यवस्थापक – श्री अरविन्द कुमार–कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ मो० ६४१२२१२३४४

शिविर संयोजक– श्री अशोक कुमार आर्य – आर्य समाज पिलखुआ, हापुड़ मो० ०६८३७०६६५४४

सहसंयोजक – संगीत शिरोमणि पं० प्रभात कुमार आर्य– पुरोहित एवं भजनोपदेशक, आर्य समाज रूद्रपुर, उधमसिंहनगर (६४१२६४६३११), श्री भरत सिंह निर्वाण–मेरठ (६४५७२१३८१०), श्री संजीव कुमार पिन्टू – मेरठ, श्री संदीप मुनी–रामगढ़तल्ला, (६०१२१३०३२२) श्री राजाराम नागर – से०नि०–डी०एस०पी० रूद्रपुर, उधमसिंह नगर (८८५६००१२०१)

प्रिय आर्य बन्धुओं/बहिनों,

उपरोक्त शिविर में आप सादर आमंत्रित हैं। कृपया इस शिविर में उपस्थित होकर योग, भजन एवं प्रवचन का लाभ उठायें। इस अवसर पर ऋषि लंगर एवं प्रसाद भी वितरण होगा।

आप महानुभावों से निवेदन है कि इस शिविर संचालन को सफल बनाये जाने हेतु आटा, दाल, चावल, खाद्य तेल, देशी घी, गैस सिलेण्डर, आम की लकड़ी, हवन सामग्री एवं नकद धन देकर सहयोग प्रदान करने की महान कृपा करें तथा पुण्य के भागीदार बनें।

योग शिविर कार्यक्रम

योग कक्षायें – प्रातः 05 बजे से 07 बजे तक

यज्ञ– प्रातः 09 बजे से 10 बजे तक

जलपान – प्रातः 10 बजे से 3 बजे तक

भजन एवं प्रवचन – प्रातः 10.30 बजे से 12 बजे तक

भोजनावकाश – 12 बजे से 2 बजे तक

द्वितीय सत्र

भजन एवं प्रवचन – अपराह्न 3 से 5 बजे तक

संध्या – सायं

भजन एवं प्रवचन – 7 से सायं 9 बजे तक

शान्ति पाठ

उपरोक्त कार्यक्रम नियमित चार दिवसों में निरन्तर चलेगा।

निवेदक – उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के समस्त आर्य जन

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।